Matangi Jayanti 2023

भारत विभिन्न संस्कृति और परंपराओं का देश है। यहां हर वर्ष कई पर्व और त्योहार मनाए जाते हैं। इन्हीं अवसरों में से एक है देवी मातंगी जयंती। देवी मातंगी जयंती के उपलक्ष पर माता की पूजा-अर्चना की जाती है। इस पावन अवसर पर जो भी कोई माता की पूजा करता है, वह सर्व सिद्धियों का लाभ प्राप्त करता है। मातंगी की पूजा व्यक्ति को सुखी जीवन का आशीर्वाद प्रदान करती है। मातंगी जयंती मार्च या अप्रैल में पड़ती है। इस वर्ष श्री मातंगी देवी जयंती 23 अप्रैल को मनाई जाएगी। देवी मातंगी दसमहाविद्याओं में से एक हैं। जो हिंदू धर्म की सर्वोच्च देवी हैं।

यह वाणी और संगीत की अधिष्ठात्री देवी कही जाती हैं। यह स्तंभन की देवी हैं तथा इनमें संपूर्ण ब्रह्मांड की शक्ति का समावेश है। देवी मातंगी दांपत्य जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाने वाली हैं, इनका पूजन करने से गृहस्थ के सभी सुख प्राप्त होते हैं। मां मातंगी पुरुषार्थ चतुष्ट्य की प्रदात्री हैं। भगवती मातंगी अपने भक्तों को अभय का फल प्रदान करती हैं। यह अभीष्ट सिद्धि प्रदान करती हैं। इनकी साधना साधक को सभी कष्टों से मुक्त कर देती है। इनके महामंत्र का जाप करने से सभी सुखों की प्राप्ति होती है। मतंग भगवान शिव का एक नाम है इनकी आदिशक्ति देवी मातंगी है। यह श्याम वर्ण और चंद्रमा को मस्तक पर धारण किए हुए हैं। यह वाग्देवी हैं इनकी चार भुजाएं हैं। मां मातंगी वैदिकों की सरस्वती है।

पलास और मल्लिका पुष्पों से युक्त बेलपत्रों की पूजा करने से व्यक्ति के अंदर आकर्षण और स्तंभन शक्ति का विकास होता है। देवी मातंगी को उच्छिष्टचांडालिनी या महापिशाचिनी भी कहा जाता है। मातंगी के विभिन्न प्रकार के भेद हैं उच्छिष्टमातंगी, राजमांतगी, सुमुखी, वैश्यमातंगी, कर्णमातंगी आदि। ब्रह्मयामल के अनुसार मातंग मुनि ने दीर्घकालीन तपस्या द्वारा देवी को कन्यारूप में प्राप्त किया था। यह भी प्रसिद्ध है कि वन में मातंग ऋषि तपस्या करते थे। क्रूर विनाशकारी शक्तियों के दमन के लिए उस स्थान में त्रिपुरसुंदरी के चक्षु से एक तेज निकल पड़ा तब देवी काली उसी तेज के द्वारा श्यामल रूप धारण करके राजमातंगी रूप में प्रकट हुईं।

राक्षसों का नाश व उनका वध करने हेतु माता मातंगी ने विशिष्ट तेजस्वी स्वरूप धारण किया। देवी माता का यही रूप मातंगी रूप में अवतरित हुआ, मातंगी लाल रंग के वस्त्र धारण करती हैं। सिंह की सवारी करती हैं, लाल होंठ वाली व अत्यंत ओजपूर्ण हैं। मातंगी लाल पादुका, लाल माला धारण करती हंै। हाथों में धनुषबाण, शंख, पाश, कतार, छतर, त्रिशूल, अक्षमाला, शक्ति आदि अपने हाथो में धारण करती हैं। मातंगी देवी की जयंती के उपलक्ष्य पर मंदिरों में माता की पूजा अर्चना की जाती है। इस दिन कन्याओं का भी पूजन होता है, माता को भोग लगाया जाता है। भक्तों में

माता का प्रसाद वितरित किया जाता है। अनेक जगहों पर जागरण एवं भजन कीर्तन का भी आयोजन होता है। मंदिरों में माता के भक्त बहुत उत्साह के साथ माता के जयकारों से माता का उद्घोष करते हैं। इस दिन भक्त व्रत भी रखते हैं।

कब मनाई जाएगी मातंगी जयंती

- मातंगी जयंती रविवार, 23 अप्रैल 2023 को वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया की तिथि को मनाई जाएगी।

मातंगी जयंती का महत्व

- हमारे धर्म शास्त्रों में मातंगी जयंती को बहुत ही शुभ और महत्वपूर्ण माना गया है।
- मातंगी जयंती के दिन 10 महाविद्याओं की नौवीं विद्या माँ मातंगी की पूजा की जाती है।
- मान्यताओं के अनुसार जो भी व्यक्ति मातंगी जयंती के दिन देवी मातंगी की पूजा अर्चना करता है माँ मातंगी उसे सर्व सिद्धियों का वरदान प्रदान करती है।
- देवी मातंगी अपने सभी भक्तो की समस्याओं को दूर कर के उन्हें सौभाग्य का आशीर्वाद प्रदान करती हैं।
- मातंगी देवी की जयंती के अवसर पर सभी देवी मंदिरों में उनकी पूजा अर्चना की जाती है।
- मातंगी जयंती के अवसर पर कन्या पूजन करने का भी नियम है।
- इस दिन देवी मातंगी को भोग लगाकर सभी भक्तों में माता का प्रसाद बांटा जाता है।
- बहुत सी जगहों पर मातंगी जयंती के दिन जागरण एवं भजन किर्तन भी आयोजित किये जाते है।
- इस दिन सभी भक्त माता के मंदिर में बहुत उत्साह के साथ माता का जयकारा लगते है और माता के नाम का उदघोष करते हैं।

माँ मातंगी का स्वरूप

- शास्त्रों में बताया गया है की मतंग भगवान शिव के अनेको नामो में से एक है।
- हमारे पौराणिक धर्म पुराणों के अनुसार भगवान शिव की आदिशक्ति देवी मातंगी को ही माना गया है।

- देवी मातंगी का स्वरुप श्याम रंग का है।
- देवी मातंगी के मस्तक पर चंद्र देव विराजमान रहते हैं।
- देवी मातंगी असुरो का संघार करने के लिए तेजस्व रूप में प्रकट हुई है।
- देवी मातंगी लाल रंग के वस्त्रों में सुशोभित रहती हैं।
- ये सिंह पर सवार रहती है और ये अपने पैरों में लाल रंग की पादुका और गले में लाल माला पहनती हैं।
- देवी मातंगी अपने हाथों में धनुष बाण ,शंख, पास, कटार, छत्र, त्रिशूल, अक्ष माला आदि धारण करती हैं।
- ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जो भी मनुष्य पलाश के फूलो, मल्लिका के फूलों और बेल पत्रों से मां मातंगी की आराधना करता है उसके अंदर आकर्षण और स्तंभन शक्ति उत्पन्न होती है।
- कुछ मान्यताओं के अनुसार मातंगी देवी का एक नाम महा पिशाचिनी भी है।

मातंगी जयंती पूजन विधि

- देवी मातंगी की साधना हमेशा रात के समय ही करनी चाहिए। देवी मातंगी की पूजा को हमेशा रात्रि में 9 बजे के पश्चात् ही शुरू करना चाहिए।
- मातंगी जयंती के दिन देवी मातंगी की पूजा करने के लिए सर्वपर्थम स्नान करें। स्नान करने के बाद साफ़ सुथरे लाल रंग के वस्त्र पहने।
- अब अपने घर के किसी एकांत कमरे में या अपने घर के पूजा कक्ष में पश्चिम दिशा की ओर अपना मुंह करके बैठ जाएँ।
- देवी मातंगी की पूजा में बैठने के लिए हमेशा लाल रंग के ऊनि आसन का इस्तेमाल करें।
- अब अपने समक्ष एक लकड़ी की चौकी स्थापित करे। अब इस चौकी पर थोड़ा सा गंगाजल छिड़ककर उसे शुद्ध कर लें।
- अब इस चौकी पर लाल रंग का कपडा बिछाएं।
- मातंगी जयंती के दिन देवी मातंगी की पूजा करने के लिए देवी मातंगी की तस्वीर , यन्त्र और लाल मूँगा माला अत्यंत आवश्यक होती है।
- अगर आपके पास इन सभी चीजों की कमी है तो किसी ताँबे की प्लेट में सिंदूर के प्रयोग से स्वास्तिक का निर्माण करें। अब इस स्वस्तिक के ऊपर एक सुपारी रखे। अब इस सुपारी को ही यन्त्र मानकर इसका पूजन करें।

- अब माँ मातंगी की तस्वीर के समक्ष शुद्ध घी का दीपक प्रज्वलित करे और देवी मातंगी को लाल रंग के फूल चढ़ाएं।
- मातंगी जयंती के दिन देवी मातंगी के कवच का पाठ अवश्य करें।
- मातंगी जयंती के दिन देवी मातंगी की पूजा करते वक़्त व्यक्ति को पूरी श्रद्धा और आस्था के साथ पूजा के सभी नियमों का पालन करना चाहिए।
- अब देवी मातंगी के मन्त्र का जाप करे।

क्या है मातंगी जयंती की कहानी

- शास्त्रों के अनुसार माना जाता है कि देवी मातंगी भगवान शिव का ही रूप हैं।
- अपने माथे पर, वह एक घुमावदार सफेद रंग का चंद्रमा पहनती हैं साथ ही उनकी चार भुजाएं चार अलग-अलग दिशाओं में निर्देशित होती हैं, इसलिए वे वाग्देवी के रूप में भी लोकप्रिय हैं।
- हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, देवी मंतंगी देवी सरस्वती का प्राचीन रूप हैं।